ISSN:2583-8849



परमानन्द भट्ट
जालोर, राजस्थान

1

मिलती हज़ार मुश्किलें उनको उड़ान में
फिर भी परिंदे डोलते हैं आसमान में

हर झूठ आपका हमें सच की तरह लगें
कैसा भरा है आपने जादू ज़ुबान में

हमसे भी दिल- लगी करी उनसे भी दोस्ती
कमरे कई है क्या तेरे दिल के मकान में

सर को ढका तो पाँव से चादर सरक गई
गुजरी हमारी जिंदगी बस खींच-तान में

तुम अपनी कोशिशों में भरो रंग जीत के
मशहूर होना है तुम्हें दुनिया ज़हान में

काबिल हमारे मुल्क में है और लोग भी
उलझे हुए हैं आप तो बस ख़ानदान में

किसको सुना रहे हो 'परम' प्यार का सबब
मेरी गली के लोग तो उलझे दुकान में

2

छाँव धूप तो आनी-जानी छोड़ो भी
तुम अपनी ये राम कहानी छोड़ो भी

कदम बढ़ाओ इन पथरीली राहों पर
कहता है नदियां का पानी छोड़ो भी

मुझे पता था सब मनवाकर छोड़ोगे
अब तो यह अपनी मनमानी छोड़ो भी

कभी कभी मेरी भी मर्जी चलने दो
तुमने जो भी दिल में ठानी छोड़ो भी

मुझे पता है तेरे दिल की हालत का
झूठ -मूठ की आनाकानी छोड़ो भी

रंगमंच के सारे खेल-खिलौने है
किसका राजा कैसी रानी छोड़ो भी

एक 'परम' ही सत्य हमेशा दुनिया में
हम सब का यह जीवन फ़ानी छोड़ो भी